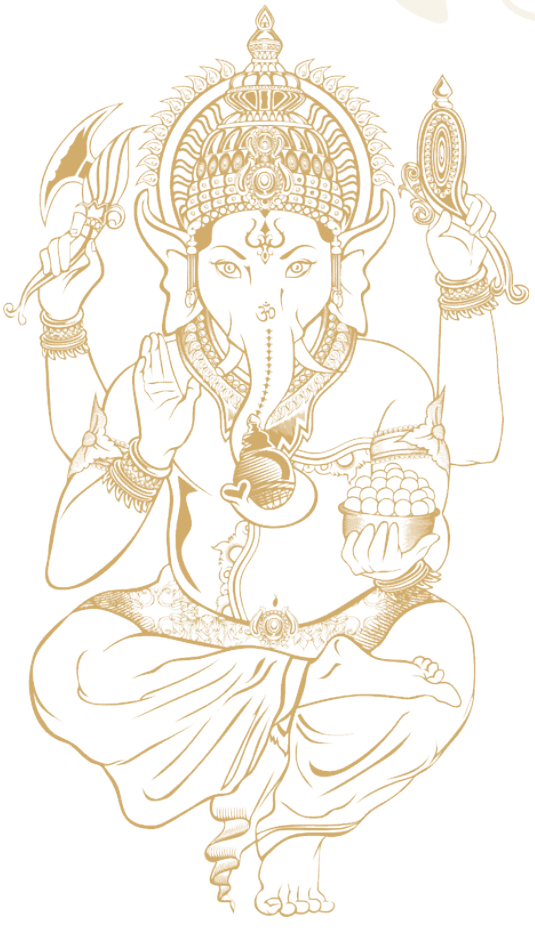

Vaibhav

aayushi

Model: Web-FreeMatching

Order No: 121503803

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
19/01/1997	जन्म तिथि	21-22/01/1999
रविवार	दिन	गुरु-शुक्रवार
घंटे 10:20:00	जन्म समय	04:50:00 घंटे
घटी 07:53:42	जन्म समय(घटी)	54:09:30 घटी
India	देश	India
Mathura	स्थान	Meerut
27:30:00 उत्तर	अक्षांश	29:00:00 उत्तर
77:42:00 पूर्व	रेखांश	77:42:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:19:12	स्थानिक संस्कार	-00:19:12 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
07:10:31	सूर्योदय	07:13:00
17:48:49	सूर्यास्त	17:48:03
23:48:59	चित्रपक्षीय अयनांश	23:50:29

विंशोत्तरी	अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी
चन्द्र 5वर्ष 9मा 4दि	04:31:45	मीन	लग्न	धनु	01:19:20	गुरु 2वर्ष 10मा 15दि
राहु	05:20:27	मक	सूर्य	मक	07:37:51	बुध
25/10/2009	15:38:57	वृष	चंद्र	मीन	00:56:12	07/12/2020
25/10/2027	10:17:35	कन्या	मंगल	तुला	04:16:06	07/12/2037
राहु 07/07/2012	11:34:52	धनु	बुध	धनु	28:59:19	बुध 06/05/2023
गुरु 30/11/2014	05:36:40	मक	गुरु	मीन	01:38:09	केतु 02/05/2024
शनि 06/10/2017	17:25:05	धनु	शुक्र	मक	27:47:29	शुक्र 03/03/2027
बुध 25/04/2020	08:41:18	मीन	शनि	मेष	03:25:34	सूर्य 07/01/2028
केतु 13/05/2021	07:11:53	कन्या व	राहु	कर्क	28:21:38	चन्द्र 07/06/2029
शुक्र 13/05/2024	07:11:53	मीन व	केतु	मक	28:21:38	मंगल 05/06/2030
सूर्य 07/04/2025	10:29:42	मक	हर्ष	मक	18:16:29	राहु 22/12/2032
चन्द्र 07/10/2026	03:41:48	मक	नेप	मक	08:00:00	गुरु 30/03/2035
मंगल 25/10/2027	11:07:13	वृश्चि	प्लूटो	वृश्चि	15:55:48	शनि 07/12/2037

लग्न-चलित

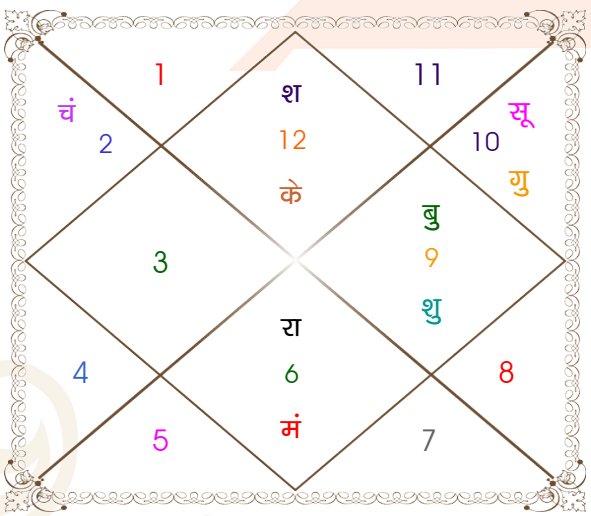

लग्न-चलित

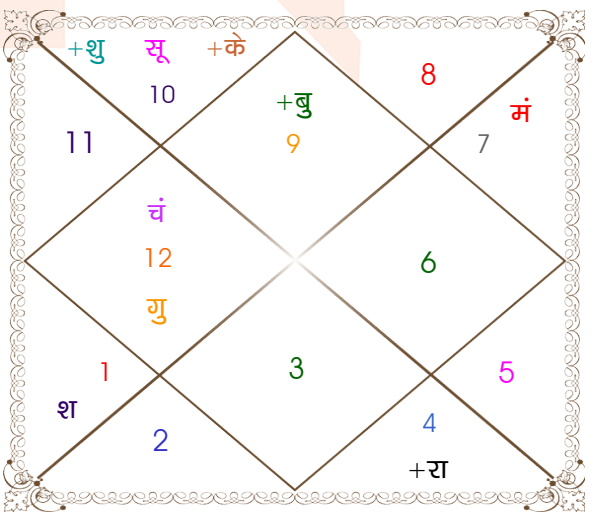

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	वैश्य	विप्र	1	0.00	--	जातीय कर्म
वश्य	चतुष्पाद	जलचर	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	वध	क्षेम	3	1.50	--	भाग्य
योनि	सर्प	सिंह	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	शुक्र	गुरु	5	0.50	--	आपसी सम्बन्ध
गण	मनुष्य	मनुष्य	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	वृष	मीन	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	अन्त्य	आद्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	26.00		

Vaibhav का वर्ग मृग है तथा aayushi का वर्ग सर्प है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार Vaibhav और aayushi का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

Vaibhav मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में सप्तम् भाव में स्थित है।

कुजजीवो समायुक्तो युक्तो व कुजचन्द्रमा।
न मंगली मंगल राहु योग।

यदि मंगल-गुरु या मंगल-राहु या मंगल-चंद्र एक राशि में हों तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल एवं राहु Vaibhav कि कुण्डली में एक राशि में हैं अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

सप्तमो यदा भौमः गुरूणां च निरीक्षिता।
तदास्तु सर्वसौख्यं च मंगली दोषनाशकृत्।।

सप्तम मंगल को गुरु देखता हो मंगली दोष कट जाता है।

क्योंकि Vaibhav कि कुण्डली में सप्तम मंगल को गुरु देखता है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

aayushi मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि मंगल aayushi कि कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

Vaibhav तथा aayushi में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।